आपसी रिश्तों की अहमियत

यूक्रेन को लेकर अमेरिका की ओर से कुछ ऐसे बयान आए थे, जिनसे संबंधों में तल्खी का संकेत मिला था। पहले तो बाइडन ने यह कहा कि यूक्रेन मामले में भारत का रुख थोड़ा हिला हुआ है। रूस को लेकर भारत का जो रुख है, वह उसे महंगा पड़ सकता है।

नीतू शाह।।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के बीच हुई बातचीत का सबसे बड़ा संदेश यही है कि दोनों देश आपसी रिश्तों की अहमियत समझते हैं। वे भविष्य में इसे और मजबूत करना चाहते हैं। अगर कोई गांठ आई भी तो दोनों उसे सुलझा लेंगे। हाल में यूक्रेन को लेकर अमेरिका की ओर से कुछ ऐसे बयान आए थे, जिनसे संबंधों में तल्खी का संकेत मिला था। पहले तो बाइडन ने यह कहा कि यूक्रेन मामले में भारत का रुख थोड़ा हिला हुआ है। इसके बाद अमेरिका के डेप्युटी एनएसए दलीप सिंह भारत आए। उन्होंने कहा कि रूस को लेकर भारत का जो रुख है, वह उसे महंगा पड़ सकता है। खासतौर पर भारत के रूस से तेल–गैस सौदे को लेकर अमेरिका की ओर से दबाव था। आखिर, इस मामले में भारत को यह कहना पड़ा कि यूरोपीय देश अभी रूस से कहीं ज्यादा तेल–गैस खरीद रहे हैं। इन सबके बीच अगर मोदी, बाइडन के बीच सोमवार को अच्छी बातचीत हुई तो वह मायने रखती है। मोदी ने अपनी तरफ से बूचा हिंसा का मुद्दा उठाया। उन्होंने भारत का यह रुख भी दोहराया कि बूचा हिंसा की निष्पक्ष जांच करवाई जाए।

मोदी ने कहा कि उन्होंने रूस और यूक्रेन के राष्ट्रपति से सीधी बातचीत की अपील की है। एक और लिहाज से यह वार्ता खास थी। दोनों नेताओं के बीच विदेश और रक्षा मंत्री स्तर की 2 प्लस 2 वार्ता से पहले यह चर्चा हुई। अक्सर मंत्री और अधिकारी शीर्ष नेताओं के बीच वार्ता की जमीन तैयार करने के लिए मिलते हैं। खैर, इस माहौल में बाइडन और मोदी ने बात की। दोनों ने यूक्रेन पर एक दूसरे का पक्ष समझा। मतभेदों को स्वीकार किया और उन्हें दूर करने की जरूरत दिखाई। साथ ही, एक दूसरे को बताने से परहेज किया कि किसे क्या करना चाहिए। इसके बाद उनका रुख आपसी रिश्तों को और गहरा करने की प्रतिबद्धता की ओर मुड़ गया। बाइडन ने भारत के साथ पार्टनरशिप को अमेरिका के सबसे महत्वपूर्ण रिश्तों में एक बताया तो प्रधानमंत्री मोदी ने दोनों देशों को नैचरल पार्टनर करार दिया। अमेरिका इस तथ्य को अच्छी तरह समझता है कि युद्ध के बाद चीन की आक्रामकता पर अंकुश लगाने के अभियान में भारत का साथ उसके लिए अहम साबित होने वाला है। इसके साथ ही यह बात भी है कि रक्षा समेत तमाम क्षेत्रों में भारत के साथ सहयोग की जो व्यापक संभावनाएं हैं उनकी अनदेखी करना अमेरिका के हित में नहीं होगा।

भारत में भी एक वर्ग यह समझ रहा है कि रूस आगे चलकर चीन का जूनियर पार्टनर बन जाएगा। इसलिए भारत को रूस से दूरियां बनानी होंगी। यानी लंबी अवधि के लिहाज से देखें तो भारत और अमेरिका वाकई नैचरल पार्टनर हैं।

सकरात्मक ऊर्जा

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। सुबह के समय थोड़ी देर के लिए खिड़की,दरवाजे खोल दें ताकि ताजी हवा और सूर्य का प्रकाश घर में प्रवेश कर सके,ऐसा करने से सकरात्मक ऊर्जा आपके घर में आएगी, वास्तुदोष दूर होंगे। इसलिए लोग अपने घर में कई तरह के पौधे लगाते हैं। वास्तु में कई ऐसे पौधों के बारे में जिक्र किया गया है, जिनको घर में लगाने से सुख–समृद्धि आती है। इन्हीं पौधों में से एक है मनी प्लांट का पौधा। मान्यता है कि इस पौधे को घर में लगाने से कभी पैसों की कमी नहीं होती। इस पौधे को घर में लगाने से मां लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है साथ ही खुशहाली बनी रहती है। हालांकि, ये पौधा तभी फलदायी होता है, जब इसे वास्तु के नियमों के अनुसार लगाया जाता है। इसके अलावा अपने घर में लगे मनी प्लांट को कभी भी दूसरों को गिफ्ट नहीं देना चाहिए।

संपादकीय

नैतिकता कहां गई!

टेस्ला की बैट्री चालित गाड़ियों को ग्लोबल वॉर्मिंग का जवाब बताया जा रहा है, लेकिन इनमें इस्तेमाल होने वाली निकिल धातु के गहरे समुद्रों से उत्खनन का जो रास्ता चोरी–छिपे यह कंपनी बना रही है, वह न केवल जैव विविधता के लिए खतरनाक है, बल्कि इसके चलते अगले कुछ सालों में मीथेन दुनिया के लिए कार्बन डायॉक्साइड से भी बड़ी समस्या हो सकती है। यहां दुनिया के आम नागरिक के रूप में हमारी चिंता कारोबार और मुनाफे से हटकर होनी चाहिए। मस्क ने अपनी कंपनी स्पेस एक्स के जरिये जब स्पेस ट्रांसपोर्ट के कारोबार में कदम रखा तो मंगल पर बस्ती बसाने और धरती के ऊपर तारों भरे आकाश जैसा ही सैटेलाइटों का एक नया चंदोवा तान देने जैसे सपनों की झड़ी लगा दी। लेकिन हकीकत यह है कि पिछले पांच–सात वर्षों में जितना खतरनाक अंतरिक्ष कचरा स्पेस एक्स के जरिये जमा हुआ है, उतना उससे पहले का सारा समय मिलाकर भी नहीं दर्ज किया गया था। उनके उलट ईलॉन मस्क की गति बिल्कुल अलग–अलग क्षेत्रों में दिखाई देती रही है, जिनके बीच कोई आपसी रिश्ता नहीं है। ईलॉन मस्क के लिए धंधे के सामने नैतिकता का कभी कोई मतलब नहीं रहा, लिहाजा सोशल मीडिया में उनकी एंट्री भी जल्द ही कुछ बड़े कारनामों का सबब बन सकती है।

ईलॉन मस्क की निजी संपत्ति भारत के जीडीपी के दसवें हिस्से के पास पहुंच रही है, लेकिन चर्चा हम उन्हें पड़ोसी मानकर ही किया करते हैं। मस्क ने 44 अरब डॉलर में ट्विटर कंपनी खरीदी है।

महंगा है सौदा?

चंद्रभूषण।।

ईलॉन मस्क की नजर ट्विटर को अपनी झोली में लाने पर है, इसका अंदाजा इस साल की शुरुआत में ही होने लगा था। इस कंपनी के 5 फीसदी से ज्यादा शेयर उनके पास होने की बात 31 जनवरी 2022 को सार्वजनिक हो गई थी। ट्विटर के निदेशक मंडल में मस्क की हरकतों को लेकर चिंता पहली बार मार्च में दिखाई पड़ी, जब कंपनी में उनकी हिस्सेदारी 9 फीसदी का दायरा पार करती नजर आई। फिर ट्विटर के सीईओ पराग अग्रवाल का ट्वीट आया कि कंपनी की तरफ से ईलॉन मस्क को बोर्ड में आने का न्यौता भेजा गया है। इस न्यौते को मस्क ने जरा भी घास नहीं डाली और ऐसे ट्वीट्स की धार बहा दी, जिनमें ट्विटर की ले–दे की गई थी। अप्रैल में ही किए गए इन हमलों के तुरंत बाद उनकी ओर से कंपनी खरीद लेने का प्रस्ताव चर्चा में आया और 25 अप्रैल को ट्विटर इंक उनके खाते में चली गई।

पिछले कुछ सालों में कई अमेरिकी कंपनियों का नाम भारत में इतनी बुरी तरह लोगों की जुबान पर चढ़ गया है कि एकबारगी इनकी जड़ें अपने देश में ही जमी होने का भ्रम होने लगता है। सुबह होते ही मोबाइल फोन ऑन करना और फेसबुक स्टेटस चेक करना ठेठ देहातों में भी सामान्य दिनचर्या का अंग बन गया

है। रही बात ट्विटर की तो उसकी अबोली कूक किसी साइट पर गए बिना भी सुनाई देने लगती है। फोन ऑन होते ही 'ऐट द रेट' निशान के साथ किसी सिलेब्रिटी का नाम उसके एक वाहियात से बयान के आधे–अधूरे हिस्से के साथ स्क्रीन पर नमूदार हो जाता है।

ज्यादातर लोगों की इसमें कोई दिलचस्पी नहीं होती, लेकिन ट्विटर की नीली चिड़िया और उस शख्स के नाम की एक झलक दिमाग पर छप ही जाती है। कमोबेश यही हाल अमेरिकी धन्नासेठों का भी है। ईलॉन मस्क की निजी संपत्ति भारत के जीडीपी के दसवें हिस्से के पास पहुंच रही है, लेकिन चर्चा हम उन्हें पड़ोसी मानकर ही किया करते हैं। मस्क ने 44 अरब डॉलर में ट्विटर कंपनी खरीदी है। रुपयों में लिखने पर यह रकम बहुत बड़ी नजर आने लगेगी– तीन लाख 37 हजार 153 करोड़ रुपये! लेकिन आश्चर्य करना ही है तो इस व्यर्थ की आंकड़ेबाजी के बजाय किसी और बात पर करें। मस्क के मैदान में कूदने तक, यानी मध्य मार्च तक ट्विटर इनकॉरपोरेटेड का मार्केट कैपिटलाइजेशन 28 अरब डॉलर बताया जा रहा था। जाहिर है, डेढ़ गुने से ज्यादा दाम देकर एक पब्लिक लिमिटेड कंपनी का मालिकाना हासिल करना पहली नजर में कोई सेंस नहीं बनाता। 15 अप्रैल से ही पश्चिमी सोशल मीडिया में बहस चल रही है कि ईलॉन मस्क अगर वाकई ट्विटर खरीद लें तो वे इसमें किस–किस तरह के बदलाव ले आएंगे। मसलन, एडिट बटन बनाना, ताकि कोई चाहे तो अपना बयान बदल सके। और ओपेन सोर्स कोड के जरिये पारदर्शिता लाना, ताकि किसी को संदेह हो तो वह अपने खाते के अपग्रेड या डाउनग्रेड होने की वजह भी जान सके। लेकिन इन छोटे–मोटे ग्राहकोचित कामों के लिए दुनिया के सबसे बड़े कारोबारी ने 28 अरब डॉलर की एक कंपनी 44 अरब डॉलर में खरीद ली, ऐसा मानने में कोई समझदारी नहीं है। यह सही है कि 'न्यू इकॉनमी' के दो और महागुरुओं बिल गेट्स और स्टीव जॉब्स की ही तरह ईलॉन मस्क भी कोई टेक्नॉलजी फ्रीक, कोई सिद्ध वैज्ञानिक, इंजीनियर या गणितज्ञ नहीं हैं। उनके पास फिजिक्स और इकॉनमिक्स की ग्रैजुएशन डिग्री जरूर है, लेकिन जिन कारोबारों पर उनकी मोहर है, उनमें इन शास्त्रों की कोई खास भूमिका नहीं है।

अष्टयोग-5000

2	1	7		5	6	3
	29		32		32	
4		5	3		2	7
	36	6	28	4	28	
5		2		3		1
7	37		26		37	6
		4	1	2		

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4999 का हल

1	7	3	4	5	6	2
6	37	6	32	2	26	1
5	2	7	4	1	6	3
4	32	4	32	4	32	4
3	6	1	4	7	2	5
7	33	2	29	6	40	7
2	7	5	1	3	4	6

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

ट्विटर कंपनी भला क्या मायने रखती है?

मोहन। स्पेसएक्स की तरफ से देखने पर वे हमें रॉकेट साइंटिस्ट लग सकते हैं, टेस्ला के पास से देखने पर बैट्री डिजाइनर या ऑटो इंजीनियर। क्या पता, कुछ समय बाद ट्विटर से जोड़कर उनका परिचय सॉफ्टवेयर टेक्नॉलजिस्ट की तरह दिया जाने लगे। लेकिन ऐसा तभी हो पाएगा, जब ट्विटर के प्रोफाइल को वे अमेरिका की बड़ी सॉफ्टवेयर या इंटरनेट बेस्ड कंपनियों के आस–पास ले जा सकें। ध्यान रहे, माइक्रोसॉफ्ट और अल्फाबेट (गूगल) अभी 2000 अरब डॉलर मार्केट कैप के आसपास मंडरा रही कंपनियां हैं, जबकि एमेजॉन की गति डेढ़ हजार और मेटा (फेसबुक) की एक हजार अरब डॉलर के आसपास मानी जाती है। इनके सामने डेढ़ गुनी कीमत हासिल करने के बावजूद 44 अरब डॉलर के मार्केट कैपिटलाइजेशन पर सिमटी ट्विटर कंपनी भला क्या मायने रखती है? इसमें कोई शक नहीं कि लोगों के दिमाग में गूगल, फेसबुक और ट्विटर का कद एक जैसा ही है।